

स्त्रीनामा - 286

वंदना यादव
मैं अकेली

मैं अकेली ही बहुत हूँ
अपनी गाथा आप सुनाने।
आई हूँ मैं यथा अकेली
अपनी सुधार स्वयं बुझाने
ऊँची - ऊँची दीवारों में
अपनी हस्ती खुद बनाने
तन्हाई की शहनाई में
नए गीत का मुखड़ा सुनने
मैं अकेली ही बहुत हूँ
अपनी गाथा आप सुनाने।।

नव दिवस के निरत सफर में
मधुर क्षणों को फिर से रचने
आई हूँ मैं चिर अकेली
खामोशी की भाषा सुनने
जनमानस के बहते दरिया में
अपनी कश्ती खुद खिवाने
अनजाने अगणित चेहरों से
प्रेम के सुंदर मोती चुनने
मैं अकेली ही बहुत हूँ।
अपनी गाथा आप सुनाने।

धरती के पहले आँचल से
अनदेखा कुछ मन में भरने
आई हूँ मैं नित्य अकेली जंगल में
फिर जीवन भरने
विरहल मन के मर्म क्षणों में
अनकहा कुछ खुद से कहने
लंबी सूखी बेजान डगर को
फूलों की फुलवारी करने
मैं अकेली ही बहुत हूँ
अपनी गाथा आप सुनाने।।

समीक्षा अगले पेज पर

“सदीनामा रोजाना बुलेटिन” के कॉलम ‘स्त्रीनामा’ में आपकी रचनाओं का आह्वान किया जा रहा है। इसमें सिर्फ स्त्री पर कविताएँ हैं, कविता पर समीक्षा भी है। इससे आप जुड़े, सुझाव और सहयोग के लिये इस नम्बर पर 9231845289, 8296808103 पर व्हाट्सएप या फोन करें।

संपादक, सदीनामा

विशेष : यह बुलेटिन पिछले 29 मार्च 2020 से रोजाना निकलता है। आपके व्हाट्सएप पर भी उपलब्ध कराएंगे,

प्रायोजक : विश्ववानी हलदर, बेलगछिया, हावड़ा